डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

बी॰ ए॰ स्नातक, सेमेस्टर - II
विषय - संस्कृत

रघुवंश महाकाव्य सामान्य परिचय

रघुवंश महाकाव्य को महाकाव्यों का मुकुटमणि कहा जाता है। यह महाकवि कालिदास का महत्वपूर्ण एवं अन्तिम उत्कृष्ट प्रौढ़ काव्य के रूप जाना जाता है। इसी महाकाव्य के कारण कालिदास रघुकार कहे जाते हैं। पाश्चात्य विद्वान कीथ ने इसे महाकवि की प्रतिभा का प्रसून कहा है। महाकवि दण्डी ने अपने लाक्षणिक ग्रन्थ काव्यादर्श में महाकाव्य के जिन लक्षणों की चर्चा की है उसका आधार रघुवंश महाकाव्य ही है। रघुवंश महाकाव्य में 19 सर्ग तथा 1569 श्लोक वर्णित है। इस महाकाव्य में सूर्यवंशी 31 राजाओं का वर्णन प्राप्त होता है। सूर्यवंशी आदि महाप्रतापी, दयालु राजा मनु, दिलीप व रघु से लेकर अन्तिम कुत्सनात्मक विलासी राजा अग्निवर्ण तक 31 राजाओं का वर्णन इस महाकाव्य में किया गया है।

रघुवंश महाकाव्य का उपजीव्य पद्म-पुराण एवं रामायण को माना जाता है। 19 सर्ग व 1569 श्लोकों के इस महाकाव्य में सर्वाधिक श्लोक 12वें सर्ग में 104 एवं सबसे कम 53 श्लोक 18वें सर्ग में प्राप्त होते हैं। रघुवंश महाकाव्य में सर्वाधिक 578 उपजाति छन्द, 548 अनुष्टुप् छन्द, 157 रथोद्धता छन्द, 91 वैतालीय छन्द, 69 वंशस्थ छन्द, 54 द्रुत विलम्बित छन्द, 46 वसन्त-तिलका छन्द, 10 मालिनी छन्द का प्रयोग हुआ है। इसमें कुल 22 प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है। रघुवंश के प्रथम सर्ग का नाम 'वशिष्ठ आश्रम प्रवेश' है। रघुवंश में राम को धीरोदात्त नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। महाकवि की

 IND CamScanner App

प्रतिभा का प्रस्फुरण पद-पद पर दृष्टिगोचर होता है। एक तरफ भावों का सौन्दर्य है तो दूसरी तरफ कलात्मकता की पराकाष्ठा। एक ओर भाषा में प्रसाद और माधुर्य है तो दूसरी ओर विविध अलंकारों की अनुपम छटा। एक ओर वाच्यार्थ है तो दूसरी ओर व्यंग्यार्थ की विस्तृत छटा। इस महाकाव्य में शृंगार, वीर, करुण तथा शान्त चारों रसों का समुचित प्रयोग दिखाई देता है।

महाकवि ने जहाँ संभोग शृंगार की सुखद अनुभूति कराई है उसी स्थल पर विप्रलम्भ शृंगार की मार्मिक अनुभूति भी दृष्टिगोचर होती है। बाह्य एवं अन्तः प्रकृति का समन्वय महाकाव्य में परिलक्षित होता है। राजा की प्रजा वत्सलता तथा प्रजा की राष्ट्रभक्ति दोनों ही देखने योग्य है। रघुवंश महाकाव्य का मूल स्रोत हम रामायण को जानते हैं किन्तु रघुवंश की कथा वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा पद्मपुराण से अधिक साम्य रखती है।

उपर्युक्त विवेचन में रघुवंशी राजाओं की प्रजावत्सलता, राष्ट्ररक्षा, गौ सेवा की विस्तृत भावना का विस्तार देखने को मिलता है। गौ सेवा में सूर्यवंश के उत्थान को ऋषि वशिष्ठ ने सहजता से बतलाया है जिसका पालन महाराज दिलीप व उनकी पत्नी सुदक्षिणा ने पूर्व मनोयोग से किया है। इति।

IND CamScanner App